शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

टेलीविजन एवं महिला सशक्तिकरण

प्रियंका (शोधार्थी)
समाजशास्त्र विभाग
वनस्थली विद्यापीठ,
राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी समाज के विकास की गतिशीलता देखने के लिए उस समाज में स्त्री की स्थिति और भूमिका की पड़ताल अवश्य की जाती है। भारत में तो कहा ही जाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता:' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है। प्राचीनकाल में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर समान अधिकार प्राप्त थे। मध्यकाल में स्त्री की दशा अत्यंत दयनीय हो गयी। आधुनिक काल में स्त्रियों को सशक्त करने के लिए अनेक समाज सुधार आंदोलन प्रारंभ हो गए। इसके परिणामस्वरुप स्त्रियों में आधुनिक चेतना का संचार हुआ। आधुनिक तकनीक के विस्तार ने स्त्रियों को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

किसी भी समाज अथवा राष्ट्र के सर्वतोमुखी अभ्युदय में नारी और पुरूष का समान महत्व है। दोनों एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को जानने के लिए उस देश में नारी पद तथा स्थिति को जानना आवश्यक है। इसको जाने बिना हम संस्कृति का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। भारतीय संस्कृति की निरंतर प्रवाहित सुदीर्घ परम्परा में नारी की स्थिति, प्रतिष्ठा, शक्ति, योग्यता आदि कालक्रम में निरंतर परिवर्तित होती रही है। भारत में आज भी सामाजिक ताना-बाना ऐसा है जिसमें अधिकांश महिलाएँ पिता या पति पर ही आर्थिक रूप से निर्भर रहती हैं, इतना ही नहीं निर्णय लेने में भी वे परिवार में पुरूषों पर ही निर्भर रहती हैं।

भारतीय गौरवशील संस्कृति में 'मातृ देवोभव' तथा 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की घोषणा कर नारी को देवी का स्थान प्रदान किया है, परन्तु वर्तमान काल में इस मान्यता में कुछ विकृतियाँ आने लगी हैं, जिसके कारण आज समाज में महिला सशक्तिकरण एक प्रमुख चुनौती बन गई है।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है-महिलाओं के लिए ऐसी परिस्थितियों का निर्माण करना जो उनमें आत्म सम्मान, आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास बढ़ाती है। यदि महिला आत्मनिर्भर है, उसका आत्मसम्मान बढ़ा हुआ है, तो वो सशक्त हैं। अतः महिलाओं में आत्मसम्मान व आत्मविश्वास की भावना विकसित करना ही महिला सशक्तिकरण है। इसलिए यह जरूरी है कि महिलाओं की सकारात्मक छवि का निर्माण किया जाए।

टेलीविजन

दृश्य-श्रृव्य तथा जनसंचार माध्यमों के द्वारा आज पूरा विश्व संचालित हो रहा है। इक्कीसवीं सदी के इन दिनों में टेलीविजन समूचे विश्व में सूचना प्रसारण सम्प्रेषण का एक शक्तिशाली

हथियार बन गया है। टेलीविजन आज समूचे जीवन तंत्र एवं सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित कर रहा है। टेलीविजन प्रसारण दुनिया का बदलता हुआ चेहरा दिखाता है।

यह अध्ययन टेलीविजन एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित है। प्रस्तुत अध्ययन सांगानेर शहर से संबंधित है। जिसमें 50 महिलाओं का चयन कर, वैयक्तिक अध्ययन द्वारा प्राथमिक तथ्यों को एकत्रित कर विश्लेषण कर निष्कर्ष दिया जाएगा। अध्ययन निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रख कर किया गया है :

1. महिलाओं में टेलीविजन के प्रभाव से शिक्षा व महिला अधिकार के बारे में आए बदलाव को जानना।
2. टेलीविजन से लैंगिक असमानता के दृष्टिकोण में बदलाव को जानना।
3. टेलीविजन के प्रभाव से महिलाओं में आत्मसम्मान, विचारधारा व निर्णय लेने की क्षमता के बारे में जानना।

महिला सशक्तिकरण और टेलीविजन

शिक्षित नारी अपने पैरों पर खड़ी हो कर समाज का एक उपयोगी अंग बनाती है। जिससे उसमें आत्मविश्वास आता है, वह अन्याय और अत्याचार को चुपचाप सहन करना छोड़ देती है, स्त्री को आर्थिक रूप से स्वतंत्र तभी बनाया जा सकता है, जब वह पढ़-लिख कर योग्य बने। महिला को शिक्षित करना समय की जरूरत है, शिक्षा के माध्यम से ही महिला को सशक्त किया जा सकता है। टेलीविजन से महिलाओं के शैक्षिक जीवन में परिवर्तन आया है। पिछले कुछ वर्षों में महिला ने साक्षरता के क्षेत्र में एक लम्बी छलांग लगाई है। उत्तरदाताओं का कहना है कि टेलीविजन पर शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों से उनकी रूचि शिक्षा के प्रति बढ़ी है। जिससे वे अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहने लगी है। टेलीविजन से उन्हें महिला शिक्षा कार्यक्रमों की भी जानकारी मिलती है। सरकार द्वारा चलाए गए शैक्षिक अभियानों की जानकारी उन्हें टेलीविजन से ही प्राप्त होती है। जिससे उनके व्यक्तित्व में आत्म-विश्वास की वृद्धि हुई है।

टेलीविजन के कार्यक्रमों से प्रभावित होकर महिलाओं के दृष्टिकोण में बदलाव आया है, शिक्षा के प्रति उनकी सजगता बढ़ी है। जबकि टेलीविजन के प्रयोग के पूर्व वो शिक्षा का महत्व इतना नहीं समझती थीं, परन्तु अब टेलीविजन के कार्यक्रमों से दैनिक जीवन से संबंधित जानकारियाँ प्राप्त होती हैं व टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों से जन-सामान्य पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है। अब उनके सकारात्मक विचार आने लगे हैं। टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों से उन्हें महिला अधिकारों की जानकारी मिलती है। उन्हें टेलीविजन के कार्यक्रमों (कोड-रेड, सत्यमेव-जयते, सावधान-इण्डिया) से पता चला है कि भारत में महिलाओं के पास कुछ विशेष अधिकार भी हैं। जैसे-समानता का अधिकार, शोषण के विरूद्ध अधिकार, मातृत्व-लाभ अधिनियम, दहेज-निरोधक अधिनियम, हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम, बाल-विवाह अवरोध अधिनियम, विधवा पुनर्विवाह, सती निरोधक कानून, विवाह-विच्छेद अधिनियम, टेलीविजन से देखकर महिलाओं को यह ज्ञात हुआ है कि इन कानूनों की सहायता से महिला की स्थिति परिवर्तित हुई है। साथ ही महिलाओं का कहना है कि उन्हें टेलीविजन से 'महिला-आयोग' के बारे में भी पता चला, जहाँ महिलाओं की मदद की जाती है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवंबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों में लड़का-लड़की की समानता की बात की जाती है। टेलीविजन पर सरकार द्वारा चलाए गए शिक्षा अभियानों के बारे में बताया जाता है। टेलीविजन पर प्रसारित विभिन्न कार्यक्रमों में लड़का-लड़की के बीच असमानता को कम करने का संदेश दिया जाता है, जिससे महिलाओं को यह ज्ञात हुआ की यह असमानता उचित नहीं है। टेलीविजन पर लैंगिक समानता के पक्ष में कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, जिससे महिलाओं में इसके प्रति जागरूकता आई है। अब महिलाएँ लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य के महत्व को समझने लगी हैं।

टेलीविजन से महिलाओं की विचारधारा में परिवर्तन आया है। टेलीविजन देखकर अब महिलाएँ समझने लगी हैं कि लड़का लड़की के बीच भेदभाव उचित नहीं है। यद्यपि यह धारणा पूरी तरह से परिवर्तित नहीं हो पाई है, फिर भी कुछ हद तक इस धारण में बदलाव आया है। जैसे लड़कियों की शिक्षा, स्वास्थ्य को लेकर परिवर्तन देखा जा सकता है। अब लड़कियों को उनकी इच्छानुसार शिक्षा दिलाई जाती है। महिलाओं में आत्मनिर्भर बनने के प्रति रूचि बढ़ी है। परिवार नियोजन से संबंधित विचारधारा में परिवर्तन आया है, अब महिलाएँ भी फैसले लेने लगी हैं। अब वो केवल दो बच्चों को अधिक महत्व देने लगी हैं। पारिवारिक कार्यों में भी अब वो अपनी पसंद को बिना किसी संकोच के कह सकती हैं और साथ ही छूआ-छूत के बंधनों में भी स्थिरता आई है, अंधविश्वासों में कमी आई है।

टेलीविजन के कार्यक्रमों से महिलाओं के आत्मविश्वास में परिवर्तन आया है, महिलाएँ बताती हैं कि वे टेलीविजन में जिस प्रकार किरदार अपने कार्य को करते हैं, मुश्किल से मुश्किल समय में भी हार नहीं मानते हैं, ये सब देखकर उनके आत्म-विश्वास को भी बल मिलता है। उनमें भी अपनी बात को समाज के सामने रखने व अपनी एक पहचान बनाने की इच्छा जागृत होती है। जिससे अब वो अपने वजूद को समझने लगी हैं। महिलाएँ समाज व परिवार में अपनी भूमिका के महत्व को समझने लगी हैं। टेलीविजन से महिलाओं में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई है। उत्तरदाताओं के अनुसार टेलीविजन में प्रसारित कार्यक्रमों को देखकर ये समझने लगी हैं कि महिलाओं को भी निर्णय लेने का अधिकार है परन्तु वे अब भी अपने वास्तविक जीवन में कुछ अपनी व्यक्तिगत चीजों को खरीदने का ही निर्णय ले पाई हैं। जबकि इनके जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय इनके स्वयं के द्वारा नहीं लिए जाते हैं।

टेलीविजन के कार्यक्रम महिलाओं के विकास में सहायक हैं। टेलीविजन ने महिलाओं को सशक्त किया है। वह पहले से अधिक जागरूक हो गई हैं तथा परिवार में बनाए गए पहले के नियम जो उनके हित में नहीं हैं। उन्हें कम मानने लगी हैं। टेलीविजन के कार्यक्रमों को देख्कर अब वो अपने अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाना भी सीख गई हैं। अब वह अपने पति व परिवार के अन्य लोगों द्वारा किए जाने वाली उत्पीडन को सहन नहीं करती, अपितु उसके प्रति आवाज उठाती हैं, अब उनका ये मानना है कि अत्याचार सहना भी अपने ऊपर अत्याचार करने जैसा है। टेलीविजन से उन्होंने सीखा की आज महिलाओं को अपनी शिक्षा के प्रति स्वयं को अग्रसर होना चाहिए। अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए।

निष्कर्ष

इस अध्यायन के बाद हम कह सकते हैं कि टेलीविजन से महिलाओं में शिक्षा के प्रति

दृष्टिकोण को बदला है, टेलीविजन के कार्यक्रम महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति अवगत करवाते हैं। लैंगिक असमानता से संबंधित कार्यक्रम देखकर, महिलाओं के दृष्टिकोण में बदलाव आया है। टेलीविजन के कार्यक्रमों को देखने से महिलाओं के आत्मविश्वास को बल मिला है, विचारधारा में परिवर्तन आया है, साथ ही कुछ हद तक निर्णय लेने की क्षमता भी विकसित हुई है। अतः हम कह सकते हैं कि टेलीविजन महिला सशक्तिकरण में सहयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 महावीर सुनील, भारत में महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम और चुनौतियां, आविष्कार पब्लिशर, जयपुर, 2013

2 प्रताप उमेश, राजेश कुमार गर्ग, महिला सशक्तिकरण, अध्ययन पब्लिशर, नई दिल्ली, 2012

3 Prasad Kiran ; Communication and Empowerment of Women : Stratgy and Policy insights from India, Published by Women Press, Delhi, 2004.